प्रमेय कमल मार्त्तण्ड भाग-१ (फोल्डर नं. ००१२७६)

मूल-प्रभाचन्द्राचार्य – सम्पादक – मोतीचन्द जैन सराफ, रवीन्द्रकुमार जैन

अनुवाद-आर्यिका जिनमतीजी

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

अनुवादके पूर्व

प्रस्तावना

ग्रन्थमाला सम्पादक की कलम से

विषय परिचय

विषयानुक्रमणिका

मंगलाचरण ---------- १

प्रतिज्ञा श्लोकादि ---------- २-४

परीक्षामुखका आदिश्लोक ---------- ५

संबंधाभिधेयादि विचार ---------- ५-७

प्रमाणादिपकों की व्युत्पति ---------- ८-१४

प्रमाणका लक्षण ---------- १५-१६

कारक साकल्यवादका पूर्व पक्ष ---------- १७-१८

कारक साकल्यवाद (नैयायिकाभिमत) ---------- १९-३३

कारकसाकल्य उपचारमात्रसे प्रमाण हो सकता है ---------- २०

कारक साकल्यका स्वरुप क्या है ----------२१

सकल कारक ही कारकसाकल्यका स्वरुप है ---------- २२

उनका धर्म, या संयोग या पदार्थान्तर ---------- २४-३२

कारकसाकल्यवादका सारांश ---------- ३२-३३

सन्निकर्षवादका पूर्वपक्ष ---------- ३४-४०

सन्निकर्षवाद (वैशेषिकाभिमत) ---------- ४१-५४

सन्निकर्षका स्वरुप ---------- ४१

योग्यता किसे कहते हैं ---------- ४२-४४

प्रमाता और प्रमेयसे प्रमाण पृथक होना चाहिये ---------- ४५

योगजधर्मका अनुग्रह ---------- ४७-४९

मनका महेश्वर से संबंध होना और महेश्वरका सर्वत्र व्यापक रहना ---------- ५०

महेश्वर संपूर्ण पदार्थोंका क्रमसे जानता है या अक्रमसे ---------- ५१

सन्निकर्षवादके खंडनका सारंश ---------- ५२-५४

ईन्द्रियवृत्ति प्रमाणका पूर्वपक्ष ---------- ५५

ईन्द्रियवृत्ति विचार (सांख्याभिमत)---------- ५६-५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञातृव्यापार विचार- पूर्वपक्ष ---------- ५९
ज्ञातृव्यापार विचार (प्रभाकर-मीमांसकाभिमत) ---------- ६०-७४
प्रभाकरद्वारा मान्य ज्ञातृव्यापाररुप... ---------- ६०
अनुमानप्रमाण भी उसका ग्राहक नहां हो सकता ---------- ६१
ज्ञातका व्यापार और अर्थप्रकाशकत्वका अविनाभाव प्रसिद्ध हैं ---------- ६२
अनुपलंभ हेतु द्वारा भी ज्ञातृव्यापार की सिद्धि नहां होती ---------- ६३
दृश्यानुपलंभके चार भेद ---------- ६४
ज्ञातृव्यापार कारकोंसे जन्य है या अजन्य ---------- ६६
कारकोंसे जन्य हैं तो क्रियात्मक है या अक्रियात्मक ---------- ६८
वह व्यापार धर्मी स्वभावरुप है या धर्म स्वभावरुप ---------- ६९
प्रत्यक्षगम्य पदार्थमें प्रश्न नहीं हुआ करते ---------- ७०
ज्ञानस्वभाववाला ज्ञातृव्यापार भी सिद्ध नहीं होता---------- ७१
ज्ञातृव्यापरके खंडन का सारांश ---------- ७३-७४
प्राप्ति परिहार विचार ---------- ७५-७९
हित अहितका लक्षण ---------- ७५
पदार्थकी प्रदर्शकता ही प्राप्ति कहलाती है ---------- ७६
प्राप्तिपरिहारका सारांश ---------- ७८-७९
निर्विकल्पप्रत्यक्षका पूर्वपक्ष ---------- ८०-८५
बौद्धाभिमत निर्विकल्प प्रमाणका खंडन ---------- ८६-११३
विश्धायक ज्ञान ही प्रमाण है---------- ८७
निर्विकल्प विशद हो और विकल्प अविशद हो ऐसा प्रतीत नहीं होता ---------- ८८
विकल्पद्वारा निर्विकल्प अभिभूत होता है ---------- ८९
विकल्पज्ञानमें दो स्वभावकी आपत्ति ---------- ९०
निर्विकल्प दृश्यको विषय करता है और सविकल्प का विषय विकल्प्य है ---------- ९१
दृश्य और विकल्प्य दोनोंको कौनसा ज्ञान ग्रहण करेगा ---------- ९२
विकल्पके धर्म द्वारा निर्विकल्पका स्वभाव क्यों नहीं दब जाता ---------- ९३
निर्विकल्प और विकल्पके एकत्वको कौन जानता है---------- ९५
बौद्धके प्रत्यक्षका लक्षण ---------- ९६
अनिश्चयस्वरुप निर्विकल्पको प्रमाण माने तो अनध्यवसाय को भी प्रमाण मानना होगा -------- ९७
वासना की सहायतासे निर्विकल्पद्वारा विकल्प पैदा किया जाता है ---------- ९९
निर्विकल्प द्वारा जैसे नीलादि विषयमें विकल्प पैदा किय जाता है वैसे क्षण क्षयादिमें क्यों
नहीं किया जाता ---------- १००
अभ्यास प्रकरण आदि नहीं होनेसे क्षणादि में विकल्प पैदा नहीं कराया जाता ---------- १०१
निर्विकल्पमें दौ विरुद्ध स्वभाव मानने होंगे ---------- १०२
अवग्रह ईहा और अवाय ज्ञान अनभ्यास रुप हैं ---------- १०३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विकल्पवासनाओंका अनादि प्रवाह ---------- १०४
प्रतिबंधके अभाव होने पर आत्मा ही विकल्पभूत ज्ञानको उत्पन्न करता है ---------- १०५
बौद्ध विकल्प ज्ञानको अप्रमाण भूत.. ---------- १०६-११०
निर्विकल्प प्रत्यक्षके खंडनका सारांश ----------१११-११३
शब्दाद्वैतवाद पूर्वपक्ष ---------- ११४
शब्दद्वैत विचार (भर्तु हरिका मंतव्य) ---------- ११९-१३८
शब्दाब्रह्मका स्वरुप ---------- १२०
ज्ञानामें शब्दानुविद्धता है ऐसा कौन से प्रमाणसे सिद्ध करते हैं, प्रत्यक्ष से या अनुमानसे ------ १२०
पदार्थ और तद् वाचक शब्दोंका प्रदेश पृथक पृथक है ----------१२१
नेत्रज्ञानमें शब्दानुविद्धता कहाँ हैं ---------- १२२
पदार्थोंमें अभिधानानुषक्तता क्या है ---------- १२४
वैखरी वाक् आदि वाणीका लक्षण ---------- १२५
पदार्थोंकी शब्दानुविद्धता अनुमानसे सिद्ध करना भी अशक्य है ---------- १२७
क्या गिरि आदि पदार्थ तद् वाचक शब्द जितने होते हैं---------- १२८
शब्दमय पदार्थ है तो बहिरे व्यक्ति को शब्द सुनायी देना चाहिये ---------- १२९
पदार्थ और शब्दमें अभेद मानेंगे तो देशभेद, कालभेद आदि प्रत्यक्षसिद्ध भेदोंका अपलाप
होगा ---------- १३०
नित्यरूप शब्दब्रह्मसे कर्म क्रमसे कार्योत्पत्ति होना अशक्य है ----------१३१
अविद्याके कारण शब्दब्रह्मको उत्पत्ति विनाशशील माना है ---------- १३२
शब्दब्रह्मकी सिद्धइ कार्यहेतुसे होती है या स्वभाव हेतुसे ---------- १३३
शब्दब्रह्मकी सिद्धि के लिये उपस्थित किया गया अनुमान ---------- १३४
शब्दाद्वैतके निरसनका सारांश ---------- १३५-१३८
संशयस्वरूप सिद्धि ---------- १३९-१४१
विपर्ययज्ञानमें अख्यात्यादि विचार ---------- १४२-१५०
विपर्ययज्ञानके विषयमें चार्वाकका अभिमत ---------- १४३
माध्यमिकमतका विपर्यय स्वरूप और सांख्य द्वारा उसका निरसन ---------- १४४
सांख्याभिमत प्रसिद्धार्थख्यातिवाला विपर्यय लक्षण अयुक्त है ---------- १४५
विज्ञानाद्वैत मतका आत्मख्याति रूप विपर्यय ---------- १४६
शंकरमतका विपर्यय ज्ञानका स्वरूप ---------- १४७
विपर्ययज्ञान अनिर्वचनीय नहीं है ---------- १४८
स्मृति प्रमोष विचार (प्रभाकर का मंतव्य) ---------- १५१-१६५
विपर्यय ज्ञान में रजत झलकता है या सीप ---------- १५२
विपर्ययमें दो ज्ञानोंके आकार ---------- १५२
प्रभाकराभिमत स्मृति प्रमोष रूप विपर्यय ज्ञानका खंडन ---------- १५४
प्रभाकर के यहाँ विवेक अख्याति संभव नहीं ---------- १५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्मृतिप्रमोष शब्दका क्या अर्थ है ---------- १५७
स्मृतिप्रमोष ज्ञानमें क्या झलकता है ---------- १५८
विपरीत आकार का झलकना स्मृतिप्रमोष है ऐसा तृतीय पक्ष ---------- १५९
द्विचन्द्रादिवेदन भी विपर्यय रूप होवेगा ---------- १६१
विपर्यय दो ज्ञान स्वरूप नहीं है ---------- १६२
विपर्ययज्ञानके विवाद का सारांश ---------- १६३-१६४
स्मृति प्रमोष खंडन का सारांश ---------- १६४-१६५
अपूर्वार्थविचारका पूर्व पक्ष ---------- १६६
अपूर्वार्थत्व विचार (मीमांसक का अभिमत) ---------- १६७-१७८
अपूर्वार्थका लक्षण ---------- १६७-१६८
सर्वथा अनधिगतको प्रमाणका विषय माने तो बाधा आयेगी ---------- १६९
निश्चित विषय को पुनः निश्चित करनेकी क्या आवश्यकता है ---------- १७०
सर्वथा अपूर्वार्थ विषयभूत ज्ञानको प्रमाण मानेंगे तो प्रत्यभिज्ञान की असिद्धि होगी---------- १७१
प्रत्यभिज्ञानको अप्रमाण माननेमें बाधा ---------- १७२
सर्वथा अपूर्वार्थको ही प्रमाणका विषय माना जाय.... ---------- १७३
अदुष्टकारणारब्धत्व किसे कहते हैं ---------- १७६
अपूर्वार्थ खंडनका सारांश ---------- १७७-१७८
ब्रह्माद्वैतवादका पूर्वपक्ष ---------- १७९-१८३
ब्रह्माद्वैतवाद (वेदांतदर्शन का मंतव्य) ---------- १८४-२१
सर्वं खल्विदं ब्रह्म ---------- १८५
प्रत्यक्ष प्रमाण सिर्फ विधि परक है ---------- १८६
बेदवादी पदार्थोंमें भेद क्यों मानते हैं, देशभेद, कालभेदादि से ---------- १८६
अनादि अविद्याका नाश भी संभव है ---------- १८८
ब्रह्माद्वैतमें सुख दुःख बंध मोक्ष आदिकी व्यवस्था ---------- १८९
जैनद्वारा ब्रह्माद्वैतका खंडन प्रारंभ ---------- १८९
प्रत्यक्षसे एक व्यक्तिका एकत्व जाना जाता है या अनेक व्यक्तियोंका एकत्व ---------- १९०
सत्ता सामान्य भूत एकत्व का ग्रहण एक व्यक्तिके ग्रहणसे होता है या अनेक व्यक्तियोंके ग्रहणसे ---------- १९१
विवादग्रस्त एकत्व, अनेकत्वका अविनाभावी है ---------- १९२
कल्पनाशब्दका क्या अर्थ है ---------- १९२-१९४
अनुमान प्रमाणसे ब्रह्माद्वैत को सिद्ध करना भी शक्य नहीं---------- १९५
ब्रह्मा जगत्को नाना रूप क्यों रचता है...----------१९६-१९७
मकड़ी स्वपभावके कारण जाल नहीं बनाती अपितु क्षुधादि के कारण... ---------- १९७
प्रत्यक्षप्रमाण सिर्फ विधायक ही क्यों है ---------- १९८
देशभेद आदि भेद आकारों के भेदोंके कारण हुआ करते हैं ---------- १९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविद्या यदि अवस्तुरूप है तो उसे प्रयत्न पूर्वक क्यों हटायी जाती ---------- १९९
तत्वज्ञानका प्रागभाव ही अविद्या है ऐसा कहना गलत है ---------- २००
भेदज्ञान एवं अभेदज्ञान दोनों भी सत्य है ---------- २०१
अविद्या से अविद्या कैसे नष्ट होती है.... ---------- २०२
स्वप्नमें पदार्थों में भेद नहीं होते हुए भी भेद दिखायी देते हैं.... ---------- २०४
बाधक प्रमाणके विषयमें ब्रह्मवादीके प्रश्न ---------- २०५
बाधकप्रमाण भिन्नविषयक है या समान विषयक है ---------- २०६
ज्ञान ही पूर्वज्ञानका बाधक हुआ करता है ---------- २०७
ब्रह्माद्वैतके खंडनका सारांश ---------- २०८-२१०
विज्ञानाद्वैतवादका पूर्वपक्ष ---------- २११-२१३
विज्ञानाद्वैतवाद (बौद्धाभिमत) ---------- २१४-२५०
बाह्य वस्तुका अभाव निश्चित हुए बिना विज्ञानाद्वैत सिद्ध नहीं हो सकता ---------- २१५
प्रत्यक्षके समान अनुमानसे भी पदार्थोंका अभाव करना अशक्य है ---------- २१६
विज्ञानाद्वैतवादी बौद्धके यहां तीन हेतु माने हैं कार्यहेतु, स्वभावहेतु, अनुपलब्धि हेतु ---------- २१७
ज्ञान और पदार्थ एक साथ उपलब्ध होने से दोनोंमें अभेद माना क्या ---------- २१८
अद्वैतसिद्धिमें दिया हुआ सहोपलंभहेतु सदोष है ---------- २१९
अद्वैत में स्तुत्य, स्तुतिकारक इत्यादि व्यस्था नहीं बनती ---------- २२०
अनुमान द्वारा ज्ञान और पदार्थमें एकत्व सिद्ध करते हो या भेदका अभाव ---------- २२१
एकोपलबंध शब्दका अर्थ क्या है ---------- २२२
अद्वैतसाधक अनुमानके प्रतिभासमानत्व हेतुका क्या अर्थ है ---------- २२३
अहं प्रत्यय के विषयमें बौद्धकी जैनके प्रति आठ शंकाए ---------- २२४
अगृहीत अहं प्रत्यय पदार्थका ग्राहक नहीं बन सकता... ---------- २२५-२२६
जैन द्वारा बौद्धके आठों शंकाओंका समाधान ---------- २३०-२३२
ज्ञान समकालीन विषयका ग्राहक है.... ---------- २३३
हेतु अनुमानका कारण है अतः जनक है ऐसा भी नहीं कह सकते ---------- २३४
ग्राह्य ग्राहकता स्वरूपके प्रतिनियमसे हुआ करती है ---------- २३६
बौद्ध एक पदार्थमें दो स्वभाव होनेका निषेध करते हैं... ---------- २३७
पदार्थमें स्वतः अवभासमानता होनेसे वह ज्ञान स्वरूप है ऐसा कहना असिद्ध है ---------- २३८
अद्वैतवादमें साध्य साधनकी व्याप्ति नहीं बनती ---------- २४०
जड़ पदार्थ प्रतिभासके अयोग्य है, यह बात जानी हुई है या नहीं ---------- २४२
अद्वैतसिद्धि में दिया गया दृष्टान्त भी साध्यविकल है ---------- २४३
सुखादि अनुग्रहादि रूप ही है या उससे भिन्न है ---------- २४४
स्वतः प्रकाशमानत्वकी ज्ञानत्वके साथ व्याप्ति है ---------- २४६
अद्वैत पदमें जो नञ् समास हुआ है वह पर्युदास प्रतिषेध वाला है या प्रसज्य प्रतिषेध वाला है ---------- २४७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विज्ञानाद्वैतवाद के खंडनका सारांश---------- २४८-२५०
चित्राद्वैतवाद (बौद्ध) ---------- २५१-२५५
बौद्धके चार भेदोंमें से एक... ---------- २५१
ज्ञानोंके आकारोंका अशक्य विवेचन... ---------- २५२
यदि सुगत कालमें अन्य प्राणी नहीं रहते.... ---------- २५३
चित्राद्वैत खंडनका सारांश ---------- २५४-२५५
शून्याद्वैतवाद (बौद्ध) ---------- २५६-२६२
ज्ञानके स्वव्यवसायात्मक विशेषणका व्याख्यान सूत्र ६-७---------- २५९
अचेतनज्ञानवादका पूर्व पक्ष ---------- २६१-२६२
अचेतनज्ञानवाद (सांख्य) ---------- २६३-२७३
ज्ञानको अचेतन मानने वाले सांख्यका पक्ष ---------- २६३
यदि ज्ञान आत्माका स्वभाव नहीं है तो... ---------- २६४
ज्ञान आत्माका धर्म है ऐसा माने तो... ---------- २६५
अन्य कारणकी अपेक्षाके विना पदार्थको जानने वाला ज्ञान... ---------- २६६
लोहेमें प्रविष्ट हुई अग्नि की तरह आत्मा में ज्ञान प्रविष्ट है.... ---------- २६७
कर्तृत्व, भोक्तृत्व, ज्ञातृत्व आदि धर्मोंका आधार चेतन ही है ---------- २६८
बुद्धिको अचेतन प्रधानका धर्म मानेंगे तो.... ---------- २७०
जो आत्माका अन्तःकरण हो वह बुद्धि.... ---------- २७१
अचेतनज्ञानवादके खंडनका सारांश ---------- २७२-२७३
साकारज्ञानवादका पूर्व पक्ष ---------- २७४-२७६
साकारज्ञानवाद (बौद्ध) ---------- २७७-२९५
ज्ञान पदार्थ से उत्पन्न होकर उसीके आकारको धारता है... ---------- २७७
ज्ञान पदार्थ के आकार होता है तो जड़ाकार भी बन बैठेगा ---------- २७८
बिना जड़ाकार हुए जड़त्वको जानता है ---------- २७९
क्षयोपजन्य प्रतिनियतसामर्थके कारण ज्ञान निराकार... ---------- २८१
ज्ञानको साकार माननेमें भी अन्योन्याश्रय दोष आता है ---------- २८२
ज्ञान यदि पदार्थाकार होता है तो उसकी अहंकार रूपसे प्रतीति होती ---------- २८४
ज्ञान और पदार्थका संश्लेष संबंध नहीं है ---------- २८६
ज्ञान जिससे उत्पन्न होता है उसीका आकार धारता है... ---------- २८७
इसप्रकार तदुत्पत्तिका इन्द्रियके साथ और... ---------- २८९
प्रत्यक्ष ज्ञान नीलको नीलाकार होकर जानते समय क्षणिकत्व भी क्यों नहीं जानता ---------- २९१
साकारज्ञानवाद के खंडनका सारांश ---------- २९३-२९५
भूत चैतन्यवाद का पूर्व पक्ष ---------- २९६-२९७
भूत चैतन्यवाद (चार्वाक) ---------- २९८-३२०
ज्ञानको भूतों का परिणमन मानना असत है ---------- २९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजातीयतत्त्व विजायीतका उपादान नहीं होता ---------- २९९
चैतन्य भूतोंसे असाधारण लक्षणवाला है ---------- ३००
अहं प्रत्यय शरीरमें नहीं होता ---------- ३०१
शरीरादिमें होनेवाला अहंप्रत्यय मात्र औपचारिक है ---------- ३०२
अनुमान से भी आत्माकी प्रतीति होती है ---------- ३०३
चैतन्य शरीरका गुण नहीं है ---------- ३०४
एक शरीरमें अनेक चैतन्य माननेका प्रसंग ---------- ३०५
चैतन्य विषयभूत पदार्थका गुणभी नहीं ---------- ३०६
भूतोंसे चैतन्यकी अभिव्यक्ति होती है... ---------- ३०७
व्यंजककारण और कारककारणमें अंतर ---------- ३०८-३०९
भूतचतुष्टय से चैतन्य उत्पन्न होता है... ---------- ३१०-३११
बिजली आदि पदार्थ भी विना उपादान के नहीं होते ---------- ३१२
अनादिचैतन्य के माने विना जन्म जात बालकके प्रत्यभिज्ञान नहीं हो सकता ---------- ३१३-३१४
शरीरके विना अहं प्रत्ययकी प्रतीति ---------- ३१५
शरीररहित आत्माकी प्रतीति नहीं होती.... ---------- ३१६
संसारावस्थामें शरीरसे अन्यत्र आत्मा का अवस्थान नहीं है ---------- ३१७
भूतचैतन्यवादके खंडनका सारांश ---------- ३१८-३२०
ज्ञानको स्वसंविदित नहीं माननेवाले का पूर्व पक्ष---------- ३२१
स्वसंवेदन ज्ञानवाद (मीमांसक) ---------- ३२२-३३९
ज्ञानको प्रत्यक्ष होना माननेमें मीमांसक द्वारा आपत्ति ---------- ३२२
जैन द्वारा उसका समाधान ---------- ३२३
भावेन्द्रियरूपमन और इन्द्रियां तो परोक्ष है ---------- ३२४
आत्मा स्वयं को जानते समय उस जाननक्रियाका करण कौन बनेगा ---------- ३२५
आत्मा और ज्ञान सर्वथा कर्मत्व रूप नहीं बनते क्यां ---------- ३२६
ज्ञानादि यदि सर्वथा कर्मत्व रूप नहीं है तो... ---------- ३२८
प्रत्यक्षता पदार्थका धर्म नहीं है ---------- ३२९
जो ज्ञापक कारण स्वरूप करण होता है वह.... ---------- ३३०
ज्ञान सर्वथा परोक्ष है तो उसकी सिद्धि किस प्रमाण से करेंगे ---------- ३३१
प्रत्यक्ष और अनुमान दोनोंसे भी उसकी सिद्धि नहीं हो सकती ---------- ३३१
जब ज्ञान और आत्मा सर्वथा परोक्ष है तब... ---------- ३३३
इन्द्रिय द्वारा जाना हुआ पदार्थ ज्ञानके परोक्ष होनेसे असिद्ध ही रहेगा ---------- ३३४
नेत्रादिज्ञान और मानसज्ञान एक साथ क्यों नहीं होते ---------- ३३६
परोक्षज्ञानके साथ हेतुका अविनाभाव.... ---------- ३३७
स्वसंवेदनज्ञानवादका सारांश---------- ३३८-३३९
आत्माप्रत्यक्षवादका पूर्व पक्ष ---------- ३४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आत्माप्रत्यक्षत्ववाद (मीमांसक) ---------- ३४१-३५४
भाट्ट के समान प्रभाकर का आत्म अप्रत्यक्षवाद भी खंडित हुआ समझना चाहिये ---------- ३४१
यदि आत्मा कर्त्ता और करण ज्ञान ये दोनों अप्रत्यक्ष हैं तो.... ---------- ३४१
प्रमितिक्रियाको आत्मा और ज्ञानसे पृथक मानते हैं तो.... ---------- ३४२
प्रमाता (आत्मा) आदिकी प्रतीति मात्र शाब्दिक नहीं है ---------- ३४३
यदि सुखादि हमारे प्रत्यक्ष नहीं है तो.... ---------- ३४४
सुखादिक प्रत्यक्ष तो होते हैं किन्तु.... ---------- ३४५
सुखादिको प्रत्यक्ष जानने मात्रसे अनुग्रहादि होते हैं तो... ---------- ३४६
जब सुखादिक सर्वथा परोक्ष हैं तो.... ---------- ३४७
प्रत्यासत्तविशेषसे भी आपा पराया भेद नहीं हो सकता ---------- ३४८
अदृष्ट के कारण विवक्षित सुखादिका.... ---------- ३५०
श्रद्धाके कारण सुखादिका नियम होना भी असंभव है ---------- ३५१
आत्माप्रत्यक्षत्ववाद का सारांश ---------- ३५३
ज्ञानांतरवेदज्ञानवादका पूर्व पक्ष ---------- ३५५-३५७
ज्ञानांतरवेद्यज्ञानवाद (नैयायिक) ---------- ३५८-४००
ज्ञान दूसरे ज्ञानद्वारा वैद्य है, क्योंकि वह प्रमेय है ---------- ३५८
नैयायिकका यह ज्ञानांतरवेद्यज्ञानवाद अयुक्त है ---------- ३५९
ज्ञान अन्यज्ञानसे वेद्य है ऐसा माननेमें अनवस्था आती है ---------- ३६०
जो अपनेको नहीं जान सकता वह अन्य पदार्थको कैसे जान सकता है ---------- ३६१
स्वयं को अप्रत्यक्ष ऐसे ज्ञानसे यदि..... ---------- ३६२
सभीकी ज्ञानोंमें स्वपरप्रकाशकपना है ---------- ३६३
जैसे महेश्वरका ज्ञान स्वपरप्रकाशक है.... ---------- ३६४
ज्ञानके साथ इन्द्रियोंका सन्निकर्ष नहीं हो सकता ---------- ३६५
स्वात्मनि क्रिया विरोधः इस वाक्यका क्या अर्थ है ---------- ३६७
भवति आदि क्रियाका क्रियावान आत्मामें विरोध नहीं हो सकता ---------- ३६९
ज्ञानमें कर्मत्वका विरोध है वह अन्य ज्ञान द्वारा जाननेकी अपेक्षा या स्वरूपकी अपेक्षा ------- ३७०
विशेषणज्ञानको करणरूप और विशेष्य ज्ञानको फल रूप मानता गलत है ---------- ३७१
विशेषण और विशेष्यको ग्रहण करनेवाला एक ही ज्ञान है ---------- ३७३
विशेषण-विशेष्य ज्ञानोंको भइन्न मानकर.... ---------- ३७४
परमतका अभीष्ट मन असिद्ध है, अनुमानद्वारा उसकी सिद्धि करना भी अशक्य है ---------- ३७५
मन और आत्माका संबंध सर्वदेशसे होगा तो दोनों एकमेक होवेंगे ---------- ३७७
मनको परवादीने अनाधेय, अप्रहेय माना है.... ---------- ३७८
अदृष्टद्वारा मनको प्रेरित करना भी अशक्य है---------- ३७९
ईश्वरादिके अनेकों ज्ञान मानते हो सो..... ---------- ३८०
प्रथमज्ञानको द्वितीयज्ञान जानता है ऐसा माने तो अनवस्था होगी ---------- ३८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समवायसंबंधसे अपना ज्ञान अपनेमें रहता है ऐसा कहना असिद्ध है ---------- ३८४
अनवस्थाको दूर करनेके लिये महेश्वरमें तीन.... ---------- ३८५
अर्थकी जिज्ञासा होनेपर मैं (अर्थज्ञान)... ---------- ३८६
ज्ञानको जाननेके लिए मन्य अन्य ज्ञानों की कल्पना करे तो... ---------- ३८८
नित्य आत्मामें क्रमसे ज्ञानोत्पत्ति होना भी जमता नहीं ---------- ३८९
अदृष्ट आदिके कारण तीन चार से अधिक ज्ञान..... ---------- ३९२
ज्ञानको स्वपर प्रकाशक सिद्ध करनेके लिए दिया गया दीपकका दृष्टांत साध्यविकल हो सो बात नहीं ---------- ३९३
ज्ञानमें स्व और परको जाननेकी योग्यता माने तो दो..... ---------- ३९४
ज्ञानांतर वैद्यज्ञानवादके खंडनका सारांश ---------- ३९७-४००
प्रामाण्यवादका पूर्व पक्ष ---------- ४०१-४०५
प्रामाण्यवाद (मीमांसक) ---------- ४०६-४६७
सूत्र ११-१२ का अर्थ ---------- ४०६
सूत्र १३ का अर्थ ---------- ४०७
मीमांसक प्रमाणमें प्रामाण्य स्वतः ही आता है ऐसा मानते हैं ---------- ४०८
ज्ञप्तिकी अपेक्षा स्वतः प्रामाण्य है या उत्पत्ति या स्वकार्यकी अपेक्षा ---------- ४०८
मीमांसकद्वारा स्वतः प्रामाण्यवादका विस्तृत समर्थन ---------- ४१०-४२९
गुणसे प्रामाण्य आता है ऐसा जैनका कहना असिद्ध है..... ---------- ४१०
प्रत्यक्षके समान अनुमानसे भी गुणोंकी सिद्धि नहीं होती ---------- ४११
इन्द्रियोंके नैर्मल्यको गुण कहना गलत है ---------- ४१४
प्रामाण्य किसे कहना ---------- ४१५
स्वतः में जो असत है वह परके द्वारा कराया जाना अशक्य है ---------- ४१६
पदार्थकी उत्पत्तिमें कारण की अपेक्षा हुआ करती है न कि स्वकार्यमें प्रवृत्ति ---------- ४१७
प्रमाणकी ज्ञप्तिमें भी परकी अपेक्षा नहीं है ---------- ४१८
संवादकज्ञानद्वारा प्रामाण्य मानना गलत है ---------- ४१९
अर्थक्रियाद्वारा प्रामाण्य आता है ऐसा कहना ठीक नहीं ---------- ४२२
हम मीमांसक अप्रामाण्यको परसे आना मानते हैं ---------- ४२४
प्रमाणके स्वकार्यमें भी परकी अपेक्षा नहीं ---------- ४२६
जैनद्वारा मीमांसकके स्वतः प्रामाण्यवादका विस्तृत निरसन ---------- ४२९-४६४
मीमांसक इन्द्रियगुणोंका अभाव क्यों करते हैं ---------- ४२९
नेत्रादि इन्द्रियकी निर्मलता उसकी उत्पत्तिके साथ रहती है अतः... ---------- ४३१
दोषोंका अभाव ही गुणोंका सद्भाव कहलाता है ---------- ४३२
अभाव भी कार्यका जनक होता है ---------- ४३५
जैसे सदोषनेत्र अप्रामाण्यमें कारण है.... ---------- ४३६
यदि प्रामाण्य स्वतः होता है तो अप्रामाण्य भी स्वतः होना चाहिये ---------- ४३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घटादिपदार्थ स्वकारणसे उत्पन्न होकर स्वकार्यमें स्वयं ही प्रवृत्त होते हैं... ---------- ४३९
मीमांसक प्रमाणका स्वकार्य किसे कहते हैं सो बतावे ---------- ४४०
अपौरुषेय होनेसे वेद स्वतः प्रमाणभूत है ऐसा कहना ठीक नहीं ---------- ४४१
लोकप्रसिद्ध बात है कि गुणवानपुरुषके कारण आगम वचनमें प्रमाणता आती है ---------- ४४२
जैसे प्रामाण्यकी उत्पत्तिमें परकी अपेक्षा नहीं रहती ऐसा.... ---------- ४४३
प्रमाणमें प्रामाण्य है क्योंकि अर्थ प्राकट्य हो रहरा.... ---------- ४४४-४४५
अनभ्यस्तदशामें संवादकसे प्रामाण्य आता है ऐसी जैन..... ---------- ४४६
अर्थक्रियाके अर्थी पुरुष पदार्थके गुणादिमें लक्ष्य न देकर.... ---------- ४४८
अनभ्यस्त या संशयादि ज्ञानोंमें ही संवादककी अपेक्षा.... ---------- ४५०
संवादकज्ञान पूर्वज्ञानके विषयको जानता है.... ---------- ४५२
बाधकाभावके निश्चयसे स्वतः प्रामाण्य आता है.... ---------- ४५५
प्रमाणमें प्रामाण्य तीन चार ज्ञान प्रवृत्त होने पर आता है... ---------- ४५७
तीन चार ज्ञानोंक् प्रवृत्त होनेका मीमांसकतानुसार विवेचन ---------- ४५९-४६०
प्रथम परिच्छेदका अंतिम मंगल ---------- ४६२-४६३
प्रामाण्यका सारांश ---------- ४६४-४६७
प्रत्यक्षैक प्रमाणवादका पूर्वपक्ष ---------- ४६८
प्रत्यक्षोधेश (द्वितीय परिच्छेदप्रारंभ) ---------- ४६९-४७९
सू. १ का अर्थ ---------- ४६९
सिर्फ एक प्रत्यक्षको प्रमाण माननेवाले चार्वाकका कथन ---------- ४७२-४७३
जैन द्वारा प्रत्यक्षैकप्रमाणवादका निरसन ---------- ४७३-४७७
प्रत्यक्षकी तरह अनुमान भी प्रमाण है ---------- ४७३
अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वक न होकर तर्क पूर्वक होता है ---------- ४७४
प्रामाण्य अप्रामाण्यका निर्णय..... ---------- ४७७
प्रमेयद्वित्वात् प्रमाणद्वित्ववादका पूर्वपक्ष ---------- ४७८-४७९
प्रमेयद्वित्वात् प्रमाणद्वित्व विचार (बौद्ध) ---------- ४८०-४८६
सूत्र नं.-२ का अर्थ ---------- ४८०
प्रमेय (पदार्थ) दो प्रकारका होनेसे.... ---------- ४८१
प्रमेयदवित्व प्रमाणदवित्वका ज्ञापक कब बहनता है... ---------- ४८३-४८५
प्रमेयद्वित्वसे प्रमाणद्वित्व माननेवाले बौद्धके खंडनका सारांश ---------- ४८६
आगमविचार ---------- ४८७-४९४
मीमांसकका आगमको पृथक् प्रमाण माननेका समर्थन ---------- ४८८
शब्दको धर्मी और अर्थवानको साध्य एवं शब्दको ही हेतु बनाकर.... ---------- ४८९-४९०
शब्द और अर्थका अविनाभाव नहीं हुआ करता.... ---------- ४९२
आगमप्रमाणका पृथकपना और उसका सारांश ---------- ४९३-४९४
उपमानविचार ---------- ४९५-४९९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मीमांसक द्वारा उपमा प्रमाणको पृथक मानना ---------- ४९५
अर्थापत्तिविचार ---------- ५००-५०३
मीमांसक द्वारा अर्थापत्तिप्रमाणको पृथक मानना ---------- ५००-५०३
अभावविचार (मीमांसक) ---------- ५०४-५१०
प्रत्यक्षद्वारा अभावांशको नहीं जान सकते ---------- ५०४
अनुमानद्वारा भी अभावांशको नहीं जान सकते---------- ५०५
अभावके प्रागभावादि चार भेद ---------- ५०६
अभावप्रमाणको नहीं माननेसे हानि ---------- ५०७
सदंशके समान असदंश इन्द्रिय प्रत्यक्ष नहीं ---------- ५०९
अर्थापत्तेः अनुमाने-न्तर्भावः ---------- ५११-५२१
जैनके प्रमाण द्वैविध्यकी सिद्धि ---------- ५११
अर्थापत्ति और अनुमानमें पृथकपना नहीं है ---------- ५१३
अर्थापत्तिको उत्पन्न करनेवाले पदार्थका अविनाभाव.... ---------- ५१४
अनुमानमें सपक्षका अनुगम रहता है और.....---------- ५१७
अर्थापत्ति अनुमानान्तर्भावका सारांश ---------- ५१९-५२१
शक्तिविचारका पूर्वपक्ष ---------- ५२२-५२४
शक्तिस्वरूपविचारः (नैयायिक) ---------- ५२५-५५०
अग्निका स्वरूप प्रत्यक्ष प्रमाणसे सिद्ध है ---------- ५२५
सहकारी कारणोंको शक्ति माना तो ---------- ५२६
जैनने शक्तिको नित्य माना है या अनित्य ---------- ५२७
पदार्थसे शक्ति भिन्न है कि अभिन्न.... ---------- ५२८
वह शक्ति एक है कि अनेक ---------- ५२९
जैनद्वारा नैयायिकके शक्ति विषयक मंतव्यका निरसन ---------- ५२९
शक्ति प्रत्यक्षगम्य न होकर अनुमान गम्य है ---------- ५३०
अतीन्द्रिय शक्ति सद्भावकी सिद्धि के लिय.... ---------- ५३०
अग्निके दाहकार्यमें प्रतिबंधकका अभाव सहकारी मानना असत् है ---------- ५३१
प्रतिबंधमणि और उत्तंभकमणि का अभाव..... ---------- ५३२
कार्यकी उत्पत्तिमें कौनसा अभाव सहकारी होगा ---------- ५३३
शक्तिके अभावको सिद्ध करनेके लिये प्रयुक्त हुआ.... ---------- ५३५
असाधारण धर्मवाले कारणसे ही कार्य होते हैं ---------- ५३६
जैसे अतीन्द्रियस्वरूप अदृष्टको माना है वैसे अतीन्द्रियस्वरूप..... ---------- ५३७
शक्तिविशेषको स्वीकार किये बिना अवस्थाविशेष सिद्ध नहीं होता ---------- ५३८
द्रव्यशक्ति नित्य है और पर्यायशक्ति अनित्य ---------- ५३८
पर्यायशक्ति अनेक सहकारी कारणोंसे उत्पन्न होती है ---------- ५३९
पदार्थ पूर्व पूर्व शक्तिसे समन्वित होकर आगे आगे की शक्ति को उत्पन्न करते हैं ---------- ५४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्येक पदार्थ की शक्तियाँ अनेक हुआ करती हैं ---------- ५४१
एक ही पदार्थ में अनेक शक्तियोंका सद्भाव दीपक के उदाहरणसे सिद्ध होता है ---------- ५४३
विशेषार्थ ---------- ५४३-५४७
शक्तिस्वरूपविचारका सारांश ---------- ५४७-५५०
अर्थापत्तेः पुनर्विवेचन ---------- ५५१-५५४
अभावस्य प्रत्यक्षादान्तर्भावः (मीमांसकके प्रति) ---------- ५५५-५८८
निषेध्य वस्तुका अधारभूतभूतल प्रतियोगि.... ---------- ५५५
मीमांसक अभावप्रमाणसी सामग्रीमें प्रतियोगीका स्मरण होना रूप कारण भी बताते हैं ------- ५५६
यदि प्रत्यक्षद्वारा भूतलको जान लेने पर भी प्रतियोगीके स्मरण.... ---------- ५५७
सांख्य को समझानेके लिये अनुमानप्रमाण द्वारा.... ---------- ५५८
प्रतियोगीकी निवृत्ति प्रतियोगी से असबद्ध है ऐसा कहना भी ठीक नहीं ---------- ५५९
प्रमाणम पंचक्राभावको विषय करनेवाले अभावप्रमाणसे....---------- ५६०
तदन्यज्ञाननामका द्वितीय अभावप्रमाण भी घटित नहीं होता ---------- ५६१
अभावद्वारा भी सद्भावकी सिद्धि होती है---------- ५६४
मीमांसकके यहां कहे गये प्रागभावादिके लक्षण सुघटित नहींहोते ---------- ५६५
इतरेतरभाव असाधारणधर्मसे व्यावृत्त हुए.... ---------- ५६६-५७०
अभावको भिन्न पदार्थरूप न माने तो अभावनिमित्तकलोकव्यवहार.... ---------- ५७१
अभाव भी अभावका विशेषण बन सकता है ---------- ५७४
मीमांसकाभिमत प्रागभाव सादिसांत है या सादिअनंत..... ---------- ५७५
विशेषणके भेदसे अभावमें भेद माना भी सिद्ध नहीं होता---------- ५७७
सत्ताको एकरूप मानते हो तो अभाव....---------- ५७८
स्याद्वादीके प्रागभावका लक्षण ---------- ५८०
प्रध्वंसाभावका लक्षण ---------- ५८१
विनाश और विनाशवानमें तादात्म्यादि संबंध नहीं है ---------- ५८२
परवादीकी विनाश और उत्पादकी प्रक्रिया गलत है ---------- ५८४
अभावप्रमाणका प्रत्यक्षादि प्रमाणोंमें अंतर्भाव करनेका सारांश ---------- ५८५-५८८
विशदत्वविचारः ---------- ५८९-६०२
अकस्माद्धूमादिके देखनेसे होनेवाले.... ---------- ५८९
व्याप्तिज्ञानको भी प्रत्यक्ष नहीं कह सकते ---------- ५९१
अस्पष्टज्ञानके विषयमें बौद्धकी शंका ---------- ५९२
अस्पष्टत्व पादर्थका धर्म नहीं है ज्ञानका है ---------- ५९३
स्पष्टज्ञानावरणकर्मके क्षयोपशमसे ज्ञान में स्पष्टता आती है... ---------- ५९५
वैशद्यका लक्षण ---------- ५९६
स्वरूप संवेदनकी अपेक्षा स्मृति आदि ज्ञान भी प्रत्यक्ष है ---------- ५९९
विशदत्वका सारांश ---------- ६०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चक्षु सन्निकर्षवादका पूर्वपक्ष ---------- ६०३-६०५
चक्षुःसन्निकर्षवादः---------- ६०६-६३२
इन्द्रियत्वात् हेतु चक्षुको प्राप्यकारी सिद्ध नहीं कर पाता ---------- ६०८
रश्मिचक्षुको कौनसे अनुमानसे सिद्ध करोगे ---------- ६०९
कामला आदि दोषसे असंबद्ध कौनसी चक्षु है ---------- ६१०
गोलकचक्षुसे किरणे निकलती हैं तो वे दिखायी क्यों नहीं देती ---------- ६१२
यदि नेत्रकिरणे अनुमान से सिद्ध हैं तो रात्रिमें सूर्य.... ---------- ६१४
यदि बिलाव आदि के नेत्रोंमें किरणे हैं तो उनसे मनुष्यके नेत्रमें क्या आया ---------- ६१६
चक्षु को प्राप्यकारी सिद्ध करनेको पुनः अनुमान प्रयोग ---------- ६१७
रूपादीनांमध्ये रूपस्यैव प्रकाशकत्वात् हेतु भी सदोष है ---------- ६१८
जिसमें भासुर रूप और उष्णस्पर्श दोनों अप्रकट हो ऐसा कोई भी तेजोद्रव्य नहीं है ---------- ६२१
धत्तूरके पुष्पके समान संस्थानवाली नेत्र किरणें शुरुमें सूक्ष्म और अंतमें..... ---------- ६२२
स्फटिक, काच, अभ्रक आदिके अंतरित.... ---------- ६२४
स्फटिकादिका नाश होकर शीघ्र अन्य स्फटिकादिका उत्पाद होनेका वर्णन ---------- ६२५
नेत्रकिरणे अतिकठोर स्फटिकादि भेदन करती है... ---------- ६२६
चक्षुः अप्राप्तार्थ प्रकाशक, अत्यासन्नार्थ अप्रकाशकत्वात् ---------- ६२७
अत्यासन्नार्थ अप्रकाशकत्व हेतु असिद्धादि दोषसे रहित है ---------- ६२८-६२९
चक्षु सन्निकर्षवाद के खंडनका सारांश ---------- ६३०-६३२
सांव्यावहारिकप्रत्यक्ष ---------- ६३३-६४०
सांव्यवहारिकप्रत्यका लक्षण ---------- ६३३
इन्द्रियके दो भेद-द्रव्येन्द्रिय, भावेन्द्रिय ---------- ६३४
भावेन्द्रियके दो भेद-लब्धि और उपयोग ---------- ६३५
नैयायिकादि का स्पर्शनादि इन्द्रियोंको अलग अलग.... ---------- ६३६
उपसंहार ---------- ६३९-६४०
प्रशस्ति ---------- ६४१
परीक्षा मुल सूत्र ---------- ६४२-६४६
कतिपय विशिष्ट शब्दों की परिभाषा ---------- ६४८
भारतीय दर्शनों का संक्षिप्त परिचय ---------- ६५६
शुद्धिपत्र ---------- ६६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org